नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

बिहार में नीतीश युग की समाप्ति

बिहार की राजनीति में एक लंबे और निर्णायक दौर का अंत हो गया है. लगभग दो दशकों तक राज्य की सत्ता का केंद्र रहे नीतीश कुमार ने राज्यसभा के लिए नामांकन दाखिल कर दिया है. इसके साथ ही यह लगभग तय हो गया है कि अब बिहार की राजनीति एक नए अध्याय में प्रवेश करने जा रही है. वर्ष 2005 से शुरू हुआ नीतीश कुमार का राजनीतिक प्रभुत्व बिहार की प्रशासनिक और सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित करता रहा है.

नीतीश कुमार का कार्यकाल केवल सत्ता में बने रहने की कहानी नहीं रहा, बल्कि इसे बिहार में प्रशासनिक सुधार और सामाजिक पुनर्गठन के प्रयासों के रूप में भी देखा जाता है. 1990 के दशक में लालू प्रसाद यादव के शासन के बाद बिहार को अक्सर पिछड़ेपन, खराब कानून-व्यवस्था और अविकसित बुनियादी ढांचे के संदर्भ में देखा जाता था. ऐसे समय में जब वर्ष 2005 में नीतीश कुमार ने सत्ता संभाली, तब उन्होंने सबसे पहले कानून-व्यवस्था को सुधारने और प्रशासनिक ढांचे को मजबूत करने पर जोर दिया. अपराध पर नियंत्रण और तेज़ न्यायिक प्रक्रिया के लिए फास्ट ट्रैक अदालतों की स्थापना जैसे कदमों ने राज्य की छवि बदलने में भूमिका निभाई.

उनकी सरकार की सबसे चर्चित योजनाओं में लड़कियों के लिए साइकिल योजना और पोशाक योजना शामिल रही. इन योजनाओं ने बिहार में बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित किया और सामाजिक स्तर पर बड़ा बदलाव लाने में मदद की. पंचायतों और स्थानीय निकायों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देने का निर्णय भी एक ऐतिहासिक कदम माना गया. इसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में महिलाएं पहली बार स्थानीय शासन व्यवस्था का हिस्सा बनीं. बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में भी नीतीश सरकार ने कई महत्वपूर्ण पहल कीं. सड़कों के निर्माण, पुलों के विस्तार और ग्रामीण संपर्क मार्गों के विकास ने राज्य के कई दूरस्थ क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़ा. बिजली आपूर्ति में सुधार और स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार की दिशा में भी सरकार ने प्रयास किए. हालांकि इन प्रयासों के बावजूद बिहार अभी भी रोजगार, औद्योगिक निवेश और पलायन जैसी समस्याओं से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सका.

नीतीश कुमार की राजनीति की एक खास पहचान उनकी लचीली रणनीति रही है. उन्होंने अलग-अलग समय पर भाजपा और राष्ट्रीय जनता दल दोनों के साथ गठबंधन कर सत्ता संभाली. इस वजह से उनके विरोधियों ने उन्हें अवसरवादी राजनीति का प्रतीक भी बताया, लेकिन समर्थकों का तर्क रहा कि उन्होंने हमेशा बिहार के हित को प्राथमिकता दी. अब जब नीतीश कुमार सक्रिय राज्य राजनीति से हटकर संसद की ओर बढ़ रहे हैं, तो बिहार में नए राजनीतिक समीकरण बनने की संभावना है. भाजपा लंबे समय से राज्य में अपनी स्वतंत्र राजनीतिक पहचान को मजबूत करने की कोशिश कर रही है. यदि भाजपा का मुख्यमंत्री बनता है तो यह पार्टी के लिए ऐतिहासिक क्षण होगा, क्योंकि अब तक बिहार की राजनीति कांग्रेस और गैर कांग्रेसी क्षेत्रीय दलों के प्रभाव में रही है. दूसरी ओर राष्ट्रीय जनता दल भी अपने सामाजिक आधार के दम पर सत्ता में वापसी का अवसर तलाशेगा. ऐसे में आने वाले वर्षों में बिहार की राजनीति अधिक प्रतिस्पर्धी और बहुस्तरीय हो सकती है. नीतीश कुमार का राजनीतिक अनुभव और संतुलनकारी भूमिका अब सीधे तौर पर राज्य की सत्ता में नहीं होगी, लेकिन उनका प्रभाव पूरी तरह समाप्त भी नहीं होगा.

निस्संदेह, बिहार के राजनीतिक इतिहास में नीतीश कुमार का नाम एक ऐसे नेता के रूप में दर्ज रहेगा, जिसने लंबे समय तक राज्य की दिशा तय की. अब यह देखना दिलचस्प होगा कि उनके बाद की राजनीति बिहार को किस नई दिशा में ले जाती है.

इजराइल के खिलाफ कभी नहीं जाएंगे पुतिन

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने (अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकार)

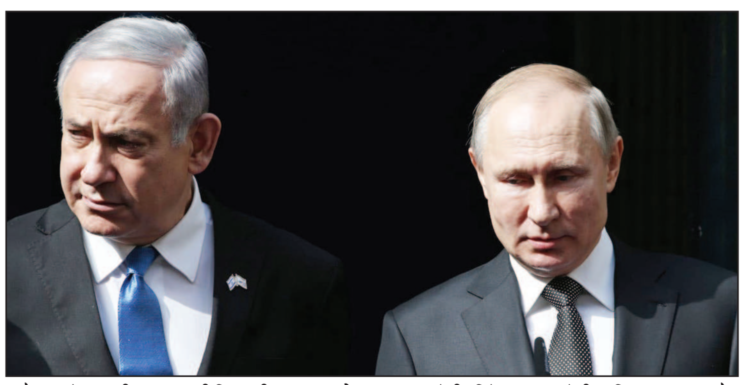

ईरान पर अमेरिका और इजराइल के भीषण हमलों को रोकने की क्षमता यदि दुनिया में किसी देश के पास है तो वह रूस है. ईरान और रूस के गहरे रणनीतिक संबंध भी है तथा दोनों देश अमेरिका के प्रतिद्वंदी भी है. रूस यदि अपनी किसी परमाणु पनडुब्बी या नौसैनिक शक्ति को ईरान की रक्षा के संकेत के रूप में क्षेत्र में भेज दे,तो इससे तुरंत रणनीतिक संतुलन बदल सकता है और हमलें रुक सकते है. भौगोलिक दृष्टि से भी रूस और ईरान की दूरी बहुत अधिक नहीं है,इसलिए सैन्य मदद देना रूस के लिए असंभव नहीं माना जा सकता. इसके बावजूद व्लादिमीर पुतिन इस प्रकार की प्रत्यक्ष सैन्य प्रतिक्रिया से बचते दिखाई दे रहे है जबकि ईरान इतिहास के सबसे ब? संकट का सामना कर रहा हैं. इसका एक प्रमुख कारण रूस और इजराइल के बीच मौजूद एक खास किस्म के संबंध है जिसे रणनीतिक भाषा में डी-कन्फ्लिक्शन कहा जाता है.

सैन्य रणनीति में डी-कन्फ्लिक्शन तंत्र एक महत्वपूर्ण तरीका है जो संभावित संघर्ष को पहले ही रोकने के लिए किया गया समन्वय है. यह शब्द मूलतः सैन्य रणनीति और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति की भाषा से विकसित हुआ,जिसका उद्देश्य युद्ध को रोकना नहीं बल्कि अनजाने टकराव को टालना होता है. रूस और ईरान के बीच सामरिक और राजनीतिक संबंध मजबूत हैं फिर भी रूस अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाए रखने की रणनीति अपनाता है.

ऐसा समन्वय पहले भी देखने को मिल चुका है. जब सीरिया के युद्ध में रूस सक्रिय रूप से शामिल था तब भी इजराइल कई बार सीरिया में ईरान समर्थित ठिकानों पर हवाई हमले करता रहा. इसके बावजूद रूस और इजराइल के बीच प्रत्यक्ष सैन्य टकराव नहीं हुआ. दोनों देशों ने एक प्रकार का डी-कन्फ्लिक्शन या समन्वय बनाए रखा जिससे उनकी सेनाओं के बीच सीधा संघर्ष टलता रहा. व्लादिमीर पुतिन की सुरक्षा और विदेश नीति को समझने के लिए यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि रूस स्वयं इस्लामी चरमपंथी हिंसा का गंभीर शिकार रहा है. 1990 और 2000 के दशक में चेचन्या और उत्तरी काकेशस क्षेत्र में अलगाववादी और जिहादी समूहों ने कई बड़े हमले किए. इनमें 2002 में मास्को थिएटर बंधक संकट और 2004 में बेसलान स्कूल घेराबंदी जैसी घटनाएँ रूस की सुरक्षा स्मृति में गहराई से दर्ज हैं. इसी अनुभव के कारण पुतिन की नीति आतंकवाद और चरमपंथ के प्रति अत्यंत कठोर रही है. रूस लंबे समय से यह मानता रहा है कि पश्चिम एशिया की राजनीति में कई देश और शक्तियां प्रॉक्सी समूहों का उपयोग करती हैं. इस संदर्भ में रूस को यह भी समझ है कि ईरान ने क्षेत्रीय प्रभाव बढ़ाने के लिए विभिन्न सशस्त्र संगठनों को समर्थन दिया है. एक ओर वह ईरान के साथ राजनीतिक और सैन्य सहयोग बनाए रखता है दूसरी ओर वह इस बात से भी सतर्क रहता है कि चरमपंथी विचारधाराएं उसके अपने क्षेत्रों विशेषकर काकेशस में फिर से न फैलें. रणनीतिक दृष्टि से काकेशस अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह रूस,मध्य एशिया,मध्य पूर्व और यूरोप के बीच संपर्क का मार्ग है. साथ ही यह क्षेत्र तेल और गैस संसाधनों तथा ऊर्जा पाइपलाइनों के कारण भी वैश्विक राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

रूस में बड़ी यहूदी आबादी और इजराइल में बड़ी रूसी मूल की आबादी भी दोनों देशों के संबंधों को मजबूत बनाने में एक सामाजिक सेतु का काम करती है. सोवियत संघ के विघटन के बाद बड़ी संख्या में रूसी यहूदी इजराइल,अमेरिका और यूरोप के देशों में चले गए. इसके बावजूद आज भी रूस में लगभग डेढ़ से दो लाख के आसपास यहूदी समुदाय मौजूद है. व्लादिमीर पुतिन के शासनकाल में रूस ने यहूदी समुदाय के प्रति अपेक्षाकृत उदार नीति अपनाई है. मॉस्को में यहूदी संग्रहालय और सांस्कृतिक केंद्रों का विकास हुआ है और रूस ने इजराइल के साथ भी संतुलित संबंध बनाए रखे हैं. रूस में यहूदी समुदाय का ऐतिहासिक प्रभाव रहा है और इजराइल में बड़ी संख्या में रूसी मूल के यहूदी रहते हैं. इससे दोनों देशों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक रिश्ते भी बने हुए हैं. यहीं कारण है पुतिन खामोश है और वे ईरान के कमजोर होने को पराजय की तरह नहीं देख रहे है बल्कि उन्हें इसमें रणनीतिक फायदें ही नजर आ रहे है.

महाकौशल की डायरी

बवंडर की चिंता के बीच गुजर रही रातें...

अविनाश दीक्षित

आने वाले कुछ दिनों में होने वाले बवंडर की चिंता, शंका अब जिला, नगर निगम व पुलिस प्रशासन को अभी से सताने लगी है. इसकी मुख्य वजह मदनमहल पहाड़ी पर जमे लोगों के आशियाने ढहाने का प्रशासन के द्वारा अल्टीमेटम देना. सुप्रीम कोर्ट की मुहर के बाद अब मदनमहल पहाड़ी पर कब्जा कर रह रहे कई लोगों के आशियाने जल्द ही ढहने वाले हैं जिसको लेकर कब्जाधारियों के खेमे में काफी उथल पुथल मची हुई है. खबर है कि कब्जाधारियों ने प्रशासन की अतिक्रमण विरोधी कार्रवाई का विरोध करने बड़ी रणनीति बनाई है जिसको लेकर कयास लगाए जाने लगे हैं कि जिस दिन भी प्रशासन का अमला दल बल के साथ कार्रवाई के लिए मदनमहल पहाड़ी के पास पहुंचेगा तो उसी दिन कब्जाधारियों द्वारा अपनी ताकत, एकजुटता का परिचय दिया जाएगा.

सूत्रों की माने तो कार्रवाई वाला दिन प्रशासन के लिए काफी सरदर्द वाला हो सकता है. कार्रवाई करना अब प्रशासन की मजबूरी हो गया है क्योंकि मप्र हाईकोर्ट के बाद अब सुप्रीम कोर्ट ने मदनमहल पहाड़ी पर जमे अवैध कब्जों को हटाने की बात पर मुहर लगा दी है. लेकिन ये कार्रवाई धरातल में पूरी करना प्रशासन के लिए किसी टेढी खीर से कम नहीं है. निगम, जिला व पुलिस प्रशासन के खुद आला अफसर इस हकीकत से वाकिफ़ हैं. वहीं खबर ये भी है कि कलेक्टर के निर्देश पर नगर निगम की टीमें , पुलिस फोर्स व अन्य सुरक्षा व्यवस्था की जा चुकी है ताकि कानून व्यवस्था बनने पर उससे निपटा जा सके. जानकारी अनुसार प्रशासन ने सूची तैयार कर ली है जिनके कब्जे मदनमहल पहाड़ी से हटाना है.

सवाल ये खड़ा हो गया है कि क्या हालात सामान्य करके कब्जाधारियों के आशियाने ढहा दिए जाएंगे या फिर किसी बवंडर के बीच ये कार्रवाई संभव होगी. जानकारों का मानना है कि पर्दे के पीछे से चल रही राजनीति के बीच मदनमहल पहाड़ी से कब्जाधारियों को संतुलित कर उनके आशियाने ढहाना प्रशासन के लिए बिल्कुल आसान नहीं होगा. विदित हो कि सुप्रीम कोर्ट ने शांति बाई शर्मा व अन्य द्वारा दायर की गई याचिका पर 24 फरवरी को सुनवाई करते हुए राज्य शासन को मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के मदन महल पहाड़ी को अतिक्रमण मुक्त करने के आदेश का शीघ्र अनुपालन करने के निर्देश दे दिए हैं.

नहीं तो बुझ जातीं मेडिकल में हजारों जिंदगियां...

जबलपुर संभाग के सबसे बड़े नेताजी सुभाष चंद्र बोस मेडिकल अस्पताल के पीछे बायोमेडिकल स्टोर के बाहर कचरे के ढेर में भड़की विकराल आग ने जहां एक बार फिर से मेडिकल प्रबंधन की लापरवाही की पोल खोलकर रखी दी तो वहीं दूसरी तरफ फायर अमले की सक्रियता ने विकराल आग पर समय रहते काबू पाते हुए मेडिकल अस्पताल में भर्ती हजारों की संख्या में मरीजों की जान बचा ली. क्योंकि कचरे के ढेर में भड़की आग अगर मेडिकल की बिल्डिंग तक पहुंचती तो बहुत बड़ी दुर्घटना से बिल्कुल भी इंकार नहीं किया जा सकता था. प्रत्यक्षदर्शियों की माने तो कचरे के ढेर से लगातार शीशियां फूटने और धमाके जैसी आवाजें आती रहीं. जिससे साफ था कि वहां सामान्य कचरे के साथ बायोमेडिकल वेस्ट भी बड़ी मात्रा में मौजूद था. आग देर रात लगी थी और कई घंटों धधकती रही लेकिन मेडिकल प्रशासन बेखबर रहा. मामले में अभी तक मेडिकल डीन डॉ नवनीत सक्सेना द्वारा जिम्मेदार अधिकारी को अभी तक तलब नहीं किया गया और न ही उस पर कार्रवाई की गई.

चने के खेत में लहलहा रही थी अफीम की फसल

चने की करीब 5 एकड़ जमीन पर जब पुलिस महकमे के अफसरों, कर्मचारियों ने लहलहाते हुए अफीम की फसल देखी तो उनके होश उड़ गए. दरअसल पुलिस को सूचना मिली कि दमोह जिले के तेजगढ़ थाना अंतर्गत पुलिस चौकी इमलिया घाट क्षेत्र के ग्राम मुराडी, ग्राम पंचायत सुहेला में चने के लगभग 5 एकड़ भूमि पर अफीम की फसल उगाई गई है. बस फिर क्या था पुलिस के हाथ लगा सोने का अंडा.. सूचना पर तत्काल पुलिस ने मौके पर दबिश दी और अफीम की फसल को जप्त किया. ये पूरा मामला दमोह, कटनी, जबलपुर, सिवनी सहित आसपास के अन्य इलाकों में काफी सुर्खियों में रहा. चर्चाएं ये भी हुईं कि महाकौशल के अन्य इलाकों में भी ऐसे ही कई खेतों में अफीम की फसलें आबाद हैं लेकिन पुलिस अफसरों तक अच्छी खासी रकम पहुंचाने के बाद वे बेनकाब नहीं हो पाती हैं. सर्वविदित है कि अवैध अफीम की खेती न केवल कानूनन अपराध है, बल्कि समाज में नशे की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाला गंभीर कृत्य भी है.

व्यापक चुनाव सुधार की आवश्यकता

भारत में व्यापक चुनाव सुधार बहुत जरूरी हैं ताकि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को गुणात्मक बनाया जा सके. यह हास्यास्पद है कि आईएएस शिक्षित अधिकारी कभी-कभी अशिक्षित राजनीतिक नेताओं द्वारा शासित होते हैं. किसी भी चुनाव में भाग लेने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता अवश्य होनी चाहिए. अनुभव है कि वरिष्ठ नौकरशाहों ने मंत्री नियुक्त होने पर अच्छा प्रदर्शन किया है. इसके विपरीत, ऐसे मामले भी हैं जहां कम शिक्षित मंत्रियों को खराब प्रदर्शन के कारण पुनः मंत्री बनने का अवसर नहीं दिया गया. चुनाव सुधारों में फिटनेस को भी तरजीह दी जानी चाहिए. लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव तीन स्तरीय होने चाहिए, जिसमें आदर्श प्रणाली में नगर निकायों के चुनाव भी शामिल हों. लेकिन राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव भी सभी सांसदों और विधायकों द्वारा एक साथ उसी प्रकार किए जाने चाहिए जैसे राष्ट्रपति का चुनाव होता है. राष्ट्रपति के पद पर रिक्ति होने की स्थिति में, उपराष्ट्रपति को शेष कार्यकाल के लिए राष्ट्रपति बनाया जा सकता है. लेकिन उपराष्ट्रपति के पद पर रिक्ति होने की स्थिति में, केवल सांसदों द्वारा शेष कार्यकाल के लिए एक अंतरिम उपराष्ट्रपति चुना जा सकता है. प्रधानमंत्री/मुख्यमंत्रियों के साथ-साथ निम्न सदनों के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव भी गुप्त और अनिवार्य मतदान के माध्यम से कम से कम 34 प्रतिशत सदस्यों द्वारा हस्ताक्षरित नामांकन के आधार पर किया जाना चाहिए. इस प्रकार निर्वाचित प्रधानमंत्री/मुख्यमंत्री को उसी प्रक्रिया द्वारा हटाया जा सकता है, लेकिन उसी प्रस्ताव में वैकल्पिक नेता का नाम देना भी जरूरी होगा. मतदान न करने का विकल्प चुनने वाले सदस्य, सदन की सदस्यता बनाए रखने के बावजूद, सदन में मतदान का अधिकार खो सकते हैं. ऐसी प्रणाली अपनाए बिना, 'एक राष्ट्र एक चुनाव' का पहलू कभी भी वास्तविकता नहीं बन सकता, क्योंकि अधूरी लोकसभा/विधानसभा या सरकार गिरने के कारण मध्यावधि चुनाव होते हैं. वर्तमान प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, अध्यक्ष और उपाध्यक्ष भी ऊपर सुझाई गई प्रणाली के अनुसार पुनः निर्वाचित किए जा सकते हैं. किसी व्यक्ति को एक से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों से या संसद और राज्य विधानसभा दोनों के लिए चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए.

-सुभाषचंद्र अग्रवाल

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

विदेशियों की अनोखी फरमाइश धारावी देखने की ख्वाहिश

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमने अपनी पुरानी विरासत को बड़े जतन से संभालकर रखा है. एशिया की सबसे बड़ी स्लम या मलिन बस्ती धारावी हमारे यहां है. मुंबई की बड़ी-बड़ी भव्य अट्टालिकाओं को यह विशाल झोपड़ा बस्ती मुंह चिढ़ाती है. अमीरी के सामने गरीबी सीना तानकर खड़ी है. आप यहां धारा तेल का इस्तेमाल करते हैं या नल से आने वाले पानी की पतली धार देखते हैं. कभी समय निकालकर धारावी देख आइए. धारावी उस धारदार चाकू के समान है जो दौलतमंद मुंबई के सीने में घुसा हुआ है. आप देखेंगे तो पता चलेगा कि गरीबी गंदगी व असुविधाओं के बावजूद कितने धैर्य या धीरज के साथ लाखों लोग धारावी में रहते हैं.'

हमने कहा, 'आज आप झोपड़ाबस्ती की चर्चा कर अपना खोपड़ा क्यों खराब कर रहे हैं. आगरा के ताजमहल, उदयपुर के महलों, राजस्थान की हवेलियों, दिलवालों की दिल्ली की बात कीजिए जहां भारत की भव्यता झलकती है. अमेरिका के न्यूयॉर्क के समान ग्लैमरस हमारी मुंबई है जो देश की आर्थिक राजधानी है और जहां शेयर मार्केट और शाहरुख, सलमान और बच्चन वाला बॉलीवुड है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जो विदेशी पर्यटक होटल ताज, गेटवे ऑफ इंडिया और मरीन ड्राइव देखते थे वह अब बड़ी तादाद में धारावी की गरीबी देखने पहुंच रहे हैं. वहां की बदहाली 2 घंटे देखने के लिए वह 15,000 रुपये का पेमेंट करते हैं. उनके साथ एक गाइड रहता है जो इस बस्ती की संकरी गलियों में विदेशी टूरिस्ट को घुमाता है जहां आम मुंबईकर भी जाने से हिचकते हैं. वहां की गरीबी व गंदगी एक बिकाऊ वस्तु या सेलेबल कमोडिटी बन गई है. धारावी में गरीबी से उपजे संघर्ष के बीच अपराध पनपता है. वरदराजन मुदलियार जैसा क्राइम बॉस भी वहां की गलियों में पनपा था. धारावी को लेकर कुछ मूवीज भी बनी हैं.'

हमने कहा, 'इतनी सरकारें आईं लेकिन कोई धारावी का भाग्य नहीं बदल सकीं. वहां फ्लैट स्कीम बनाने, महानगरीय सुविधाएं प्रदान करने का काम नहीं हुआ. इस झोपड़ाबस्ती का चेहरा-मोहरा कौन बदलेगा?' पड़ोसी ने कहा, 'झोपड़े में रहने वाला भी उम्मीद रखते हुए भजन गा सकता है- मेरी झोपड़ी के भाग आज खुल जाएंगे, राम आएंगे !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12189 -डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	■	4	5	6
7		■	8				
9		10		■	11		■
■	12		■	13		■	14
15					■	■	
	■		■	16	17	18	
19	20	■	21				■
■	22			■	■	23	

ऊपर से नीचे

1. रसयुक्त सब्जी, शोरबेदार तरकारी या मांस 2. डांटना, झिड़कना, दुत्कारना 3. तप्त होना, धूप-आंच आदि से गरम होना 4. फैलाना, छितराना 5. कबूतर 6. बर्बादी, अस्तित्व न रह पाना 10. प्रस्थान, प्रयाण 13. मनाने की क्रिया या भाव 14. अधिक, ज्यादा, काफी मात्रा में अधिक 15. कोष, ढेर (उर्दू) 17. 'मैं' का बहुवचन 18. सौ का समूह, शताब्दी 20. खुशी का दिन, मुसलमानों का मजहबी त्योहार (उर्दू) 21. पानी

बाएं से दाएं

1. दो टूक बात (उर्दू) 4. व्यर्थ बोलना. बकवास करना 7. केशलता, बालों का गुच्छा जो नीचे की ओर लटके (उर्दू) 8. पलंग पर बिछाने की चादर. 9. अस्वीकृत करना, नहीं कहना या करना 11. रात्रि, निशा 12. सूजी, कण, दाना 13. निषिद्ध, वर्जित 15. घर का वह भाग जिसमें स्त्रियां रहती हैं (उर्दू) 16. जंगलीपन, पागलपन, उज्जड़ता 19. एक प्रकार की छोटी सरसों, अल्प मात्रा 21. जनसाधारण की राय 22. हस्तक्षेप, अधिकार, अख्तियार (उर्दू) 23. ऋण (उर्दू)

Solution 12188

क	मां	ड	र	■	■	कां	ता
सा	ग	■	सा	रां	श	■	ज
व	■	बा	त	ची	त	■	म
ट	क	सा	ल	■	क	रा	ह
■	रा	■	■	भ	■	■	ल
प	रो	प	का	र	■	पा	■
ज	प	■	स	मा	नां	त	र
र	ण	■	नी	र	■	क	क्षा

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष केप्रारंभ में अचानक धन लाभ का योग है, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, वर्ष के मध्य में राजनैतिक क्षेत्र में विवाद के कारण मन खिन्न रहेगा, साझेदारी में विवाद बढ़ेगा, धन संकट का सामना करना होगा, वर्ष के अन्त में व्यक्तिगत संबंधों मेंसुधार होगा, मित्रों के सहयोग से लाभ होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों से धन संकट का सामना करना पड़ेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का साझेदारी में विवाद बढ़ेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को मित्रों का सहयोग, व्यापार मं वृद्धि होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को सहयोग प्राप्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक मित्रों की मदद मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को निजी पुरूषार्थ की प्राप्त होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्रों का सहयोग रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. सुन्दर आकर्षक व्यक्तित्ववान कार्यो के प्रति सजग रहने वाला होगा. परोपकारी एवं दयालु होगा. अच्छी शिक्षा प्राप्त करेगा. नौकरी में अच्छी सफलता प्राप्त होगी. माता पिता का पूरा ध्यान रखेगा. जन्म स्थान के पास भाग्योदय होगा.

मेष- सुविधा की कमी से महत्वपूर्ण कार्य में मुश्किल होगी. भूमि भवन संपत्ति के कार्यो में सफलता मिलेगी. मित्रता उपयोगी रहेगी. सात्विक कार्य बनेंगे.

वृषभ- बातों बातों में नये काम की शुरूआत हो सकती है. आपके द्वारा किया गया प्रयास सार्थक होगा. मित्र वर्ग मदद करेंगे. कामकाजी यात्रा होगी.

मिथुन- अपने ही लोग उलझानें की कोशिश करेंगे. महत्वपूर्ण समस्याओं का समाधान होगा. मांगलिक कार्य बनेंगे. प्रवास में उठाईगीरों से सावधानी रखें.

कर्क- अधिकारियों से मेलजोल तरक्की में सहायक रहेगा. नये संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी. संतान पक्ष का सुख मिलेगा.

सिंह- विवादास्पद मामले हल होने की संभावना है. मन में प्रसन्नता रहेगी. आय में वृद्धि होगी. पूज्य व्यक्ति का सहयोग मिलने का योग है.

कन्या- व्यवहारिक कार्यो में सावधानी बांछनीय. अनावश्यक विवाद को टालना हितकर रहेगा. मान सम्मान प्राप्त होगा. साहस संयम रखकर कार्य करें.

तुला- सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल होकर खुशी मिलेगी. वाहन सुख मिलेगा. स्वास्थ्य संबंधी सावधानी रखें. मान सम्मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी.

वृश्चिक- वस्तु सम्हालकर रखे. उदर विकार हो सकता है. नवीन योजना का लाभ होगा. भावुकता से बचें. लाभ कम, खर्च अधिक होगा.

धनु- अपनों की मदद करके आप खुश रहेंगे. पारिवारिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. व्यवसायिक मामलों में विचार होगा. अतिथि आगमन होगा.

मकर- घरेलू कामकाज में व्यस्तता रहेगी. पत्नी के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य बनेगा. कोई ऐसी बात मालुम होगी, जिससे आपको प्रसन्नता होगी.

कुम्भ- अपूर्ण समाचारों पर गलत निर्णय ले सकते हैं. स्वास्थ्य का ध्यान रखें. लापरवाही से कार्य करने में कष्ट हो सकता है. मांगलिक कार्य बनेगा.

मीन- प्रेम प्रसंगों में प्रगाढ़ता आयेगी. मनचाही वस्तुओं की प्राप्ति होगी. लाभदायक अवसर प्राप्त होने का योग है. वैवाहिक कार्यों में सपफ्लता मिलेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

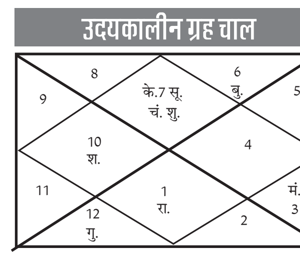

पंचांग

रा.मि. 15 संवत् 2082 चैत्र कृष्ण तृतीया भृगुवासरे शाम 5/16, हस्त नक्षत्रे दिन 9/6, गण्ड योगे प्रातः 6/54, विष्टि करणे सू.उ. 6/11, सू.अ. 5/49, चन्द्रचार कन्या रात 9/55 से तुला, पर्व- संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक- 8,0,5.

व्यापार भविष्य

चैत्र कृष्ण तृतीया को हस्त नक्षत्र के प्रभाव से चांदी, के भाव में तेजी होगी. रूई, कपास, सूत, बिनौला, खली, के भाव में वृद्धि होगी. वायदा विचार आज 12 बजकर 32 मिनिट से विशेष रूप से बाजार का रूख देखकर कार्य करें. भाग्यांक 3207 है.

SUDOKU 7321

				6	8	5		
	1						2	
		2						8
			4					9
6				5				1
2					3			
5						3		
	8						6	
		4	9	1				

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 7320

2	4	6	7	9	3	5	8	1
3	1	5	2	8	6	4	7	9
7	8	6	1	5	4	2	3	6
6	5	7	9	3	8	1	4	2
9	3	1	4	7	2	8	6	5
4	2	8	6	1	5	7	9	3
1	9	2	3	4	7	6	5	8
5	7	3	8	6	1	9	2	4
8	6	4	5	2	9	3	1	7